Q(1) Discuss the principles of T.A.T. for personality assessment.

A

Q(2) Short Notes on — TAT

TAT technique of personality measurement

'Thematic apperception Test' → TAT

Henry Murray, 1938 ने व्यक्तित्व के माप के लिए एक परीक्षण विकसित किया, जिसे TAT कहते हैं। इन्होंने व्यक्तित्व के संबंध में फ्रायड, युंग, Mc Duggal आदि मनोवैज्ञानिकों के गत्यात्मक संकल्पनाओं (dynamic concepts) के आधार पर अपना व्यक्तित्व संबंधी सिद्धान्त विकसित किया। Murray के अनुसार व्यक्ति की आवश्यकताएं (Needs) प्रेरक (Motives) तथा वातावरण की उद्दीपन-परिस्थितियाँ (stimulus situations) जिसको इन्होंने दबाव (Press) कहा, व्यक्तित्व का आधार होते हैं। संक्षेप में Murray के अनुसार व्यक्तित्व आवश्यकताओं तथा वातावरण के दबाव (Press) की अन्तर्क्रिया है। इन्होंने आवश्यकता (Need) से एक क्रिया प्रवृत्ति (Action tendency) के उत्पन्न होने की कल्पना की जिसका संबंध वातावरण के दबाव (Press) से रहता है। इस प्रकार इन दोनों का संबंध एक प्रसंग (Thema) से बन जाता है, इसी अर्थ में Murray के व्यक्तित्व सिद्धान्त को "Need - Press - Thema theory of personality" कहते हैं।

(2)

Murray ने Morgan के साथ 1935 में 'TAT' परीक्षण विकसित किया। "TAT" एक प्रक्षेपण परीक्षण (projective test) है, जिससे व्यक्तित्व के चेतन तथा अचेतन दोनों ही स्तर के प्रेरकों का माप हो जाता है। कुछ अस्पष्ट चित्रों की उद्दीपन परिस्थिति को देखकर व्यक्ति उनमें अपने भाव तथा अभिप्रेरणाओं को प्रक्षेपण के द्वारा व्यक्त करता है जो उसके व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पक्षों को अभिव्यक्त कर देता है।

Morgan, King तथा Robinson (1978) के शब्दों में
" TAT as a projective method of assessing personality use standard sets of ambiguous stimulis people project their feelings and motives into them, and thus their responces may reveal important aspects of personality."

TAT में 30 अस्पष्ट चित्र होते हैं जो जीवन की परिस्थितियों को झलक होती है। एक सादा कार्ड भी रहता है। इनमें से कुछ वयस्क पुरुषों के लिए, कुछ वयस्क महिलाओं के लिए, कुछ दोनों के लिए, फिर कुछ बच्चों के लिए होते हैं। पात्रों के लिंग (sex) तथा आयु (Age) के अनुसार 20 कार्ड चुन लिये जाते हैं और पूरा परीक्षण दो सत्रों (sessions) में 10-10 कार्डों से लिये जाते हैं।

पात्र को पहले एक चित्र देखने को दिया जाता है और बताया जाता है कि यह उसकी कल्पना की जाँच है जिसमें उस चित्र संदर्भों में एक कहानी बनानी होगी कि — (a) चित्र में दिखने वाले पात्र या पात्रों के साथ यह स्थिति क्यों उत्पन्न हुई

(B.) वर्तमान में क्या हो रहा है, कि चित्र में पात्र क्या कर रहे हैं।

(C.) इसका अंतिम परिणाम क्या होने जा रहा है?

इस प्रकार पात्र के द्वारा भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों के ~~प्रसंग~~ प्रसंग में कहानी लिखनी होती है। अधिकांश पात्र चित्र के किसी नायक (Hero) या Main Character के साथ अपना तादात्म्य (Identification) स्थापित कर लेते हैं। पात्र, बोलकर या स्वयं लिखकर अपनी कल्पनाओं को कहानी का रूप देता है। फिर इन कहानियों के संबंध में पात्रों से साक्षात्कार (interview) के द्वारा, जिससे कि आवश्यकताओं का पता लगाया जाता है कि कहानी की किसी घटना या किसी चरित्र का वर्णन किया। इस तरह T.A.T पर लिखित विभिन्न कहानियों के द्वारा पात्र के अपने व्यक्तित्व के आंतरिक प्रेरकों, सांस्कृतिक तत्वों, अचेतन शक्तियों का पता चल जाता है।

इस परीक्षण की विशेषता यह है कि व्यक्ति के आवश्यकता तंत्र (Need system) के अनुक्रम को उसके वातावरण के दबाव (press) तथा उनका किसी प्रसंग (Thema) से विशेष संबंध रहता है। ये सभी पात्र की कल्पनाओं के द्वारा व्यक्त हो जाते हैं। उसके व्यक्तित्व में कौन सी आवश्यकतायें प्रबल रूप से वातावरण के दबाव (press) से संबद्ध है, अर्थात आवश्यकतायें वातावरण को किसी व्यक्ति, वस्तु किसी परिस्थिति से संबंधित रहती हैं जिनका एक निश्चित अभिनिवेश (Cathexis) रहता है। अर्थात अभिनिवेश जब धनात्मक रहता है तो वह व्यक्ति को अपनी ओर खींचता है, जब यह ऋणात्मक होता है तो वह व्यक्ति को अपने से दूर रखता है।